हरियाणा में किसानों के माफ किए गए ऋणों के आंकड़ों की जांच के लिए हरियाणा विधान सभा की समिति की रिपोर्ट पर चर्चा (पुनरारम्भ)

बिजली मंत्री (श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला) : अध्यक्ष महोदय, एक कमेटी सदन के द्वारा गठित की गई थी। मेरी सोच है कि आपने जो फिराखदिली दिखाई उसके लिए हम आपका सारे सदन की तरफ से धन्यवाद करते हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि लोक दल के साथी कम से कम जो बात कहना चाहते हैं, वह सदन में कहें और सरकार ने भी बार-बार कहा कि सभी सदस्यों को बोलने का मौका दिया जाए लेकिन वे नहीं बोले। उनके एक मैम्बर को नेम कर दिया गया लेकिन फिर भी सदन के नेता ने उनको सदन में वापिस बुलाने के लिए कहा। सर, आपने फिर से फिराखदिली दिखाते हुए उनको सदन में वापिस बुला लिया। दो बार उनके कारण से हाउस को एडजर्न कर दिया। आपने और हमने उनसे यह भी कहा कि आप तारीख निश्चित कर दें कि ओम प्रकाश चौटाला जी किस दिन मीटिंग में आएंगे। वे फिर भी नहीं माने। आपने यह भी कहा कि कोई और कागज देना चाहते हैं, वह दे दें तो वे उसको भी नहीं माने। आपने यह भी कहा कि ओम प्रकाश चौटाला जी हाउस में आकर अपनी एक्सप्लेनेशन दे दें, वे उसको भी नहीं माने। अध्यक्ष महोदय, बात वही है जो कि मैंने पहले भी कही थी कि हरियाणा में खड़ी बोली में कहावत है "चोर की मां कुलड़ी में मुंह देवे और रोवे।" सच बात तो यही है कि जैसे चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी ने, मुलाना जी ने और दूसरे सदस्यों ने भी चर्चा की है कि 1987 से वर्षों तक दम भरा जाता था और आज हम 2008 में आ गए हैं, चौधरी देवी लाल जी, जो कि अब इस दुनिया में नहीं रहे हैं, चौधरी ओम प्रकाश चौटाला जी और उनके दोनों बेटे जहां पर भी जाते थे, पब्लिक मीटिंग में जाते थे, गांवों में जाते थे सिर्फ यही बात कहते थे कि हमने लोन माफ किए हैं। ये जब भी अखबारों में, रसालों में या पब्लिक मीटिंग में ब्यान देंगे, तो सिर्फ एक ही बात कहेंगे कि 1987 में हमने हजारों करोड़ रुपए के लोन माफ किए हैं। आदरणीय भांगे राम गुप्ता जी की चेयरमैनशिप में जो कमेटी बनी थी उसने उनकी पोल खोल कर रख दी है कि वे हजारों करोड़ रुपए नहीं थे। वे केवल 34 करोड़ 31 लाख रुपए थे। अध्यक्ष महोदय, क्योंकि ढोल की पोल खुलने वाली थी इसलिए उन साथियों को लगा कि अब यहां से जाना ही अच्छा है। अध्यक्ष महोदय, अब इन्होंने 1990

[श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला]

के लोन वेवर स्कीम की भी बात की थी। अध्यक्ष महोदय, जब श्रीमती सोनिया गांधी जी की सरकार द्वारा किसानों के 60,000 करोड़ रुपए के कर्जे माफ किए गए हैं, अब वे उसके साथ भी मुकाबला करते हैं यह जो 60,000 करोड़ रुपए के कर्जे माफ किए गए हैं इसके बारे में उन्होंने कहा कि हमने भी 1 लाख 23 हजार करोड़ रुपए माफ किए थे। सर, हमारी सरकार ने बिजली बिलों के 1600 करोड़ रुपए माफ किए तो उसके मुकाबले में उन्होंने कहा कि हमने इतने हजारों करोड़ रुपए माफ कर दिये। आपने एक कमेटी बनाई और उस कमेटी के माध्यम से सदन में आंकड़े सामने आए। स्पीकर सर, 1987 में केवल 34 करोड़ 31 लाख रुपए के ही लोन माफ हुए थे। 1990 में हरियाणा के अन्दर जो कर्जे माफ हुए वे केवल 130 करोड़ 89 लाख रुपए के थे जिसमें हरियाणा का हिस्सा मात्र 65 करोड़ 45 लाख रुपए था। यह कर्जा हरियाणा स्टेट कोआप्रेटिव, एग्रीकल्चर और हरियाणा स्टेट रूरल डवैल्पमैंट दोनों बैंकों का मिलाकर हरियाणा स्टेट के हिस्से वाला कर्जा था। अध्यक्ष महोदय, 65 करोड़ 45 लाख में से भी 25 करोड़ 46 लाख रूपए रह गए थे, जब 23 जून 1991 में कांग्रेस की हमारी सरकार बन गई थी, उस वक्त हमने दिए थे। अध्यक्ष महोदय, सदन में दो-तीन बातें रखी गई हैं मैं उस बारे में सदन में चर्चा करना चाहूंगा। स्पीकर सर, कमेटी की टर्मज आफ रैफरैंस में स्पष्ट लिखा हुआ है, वह टर्मज ऑफ रैफरैंस नम्बर 4 मैं पढ़कर सुनाता हूं कि–

> "The report of the Committee will be submitted to the House during the current Session.

आज इस सत्र में बिजनैस एडवाईजरी कमेटी का निर्णय जो हाउस ने अडाप्ट किया है उसके मुताबिक आज सैशन का आखिरी दिन है और आज यह रिपोर्ट भी आ चुकी है। (शोर एवं व्यवधान) सर, उस कमेटी की 3 डिफरैंट हियरिंग्ज हुई और श्री ओम प्रकाश चौटाला को उसमें आने का मौका दिया गया। श्री ओम प्रकाश चौटाला ने कमेटी से रिकॉर्ड मांगा और वह रिकॉर्ड कमेटी ने उनको दे भी दिया था। सर, ओम प्रकाश चौटाला हाउस में तो आते थे अपनी हाजिरी लगाते और 600 रुपए का अलाउंस ले लेते थे। जब गुप्ता जी की कमेटी का टाईम होता था तो दौड़ जाते थे। जब उनसे इस बारे में पूछा जाता था तो वे कहते थे मैं अभी स्टेशन से बाहर हूं। एक दिन तो अध्यक्ष महोदय, 3 बजे कमेटी की मीटिंग थी और वे दो बजे सदन से जा रहे थे तो मांगे राम गुप्ता जी ने उनको पकड़ कर कहा कि साहब अभी कमेटी की बैठक है उसमें आओगे न आप। उन्होंने कहा कि हां मैं जरूर आऊंगा। लेकिन वे मीटिंग में नहीं आए। उनका यह कंडैक्ट था क्योंकि उनके पास कहने को कुछ था ही नहीं। अध्यक्ष महोदय, उनकी ढोल की पोल पूरी तरह से गुप्ता जी की कमेटी के पास जाकर खुलने वाली थी इसलिए बार-बार कहने के बाद भी वे उस कमेटी की मीटिंग में नहीं गए। अध्यक्ष महोदय, यह भी इस हाउस के अंदर कहा गया कि कमेटी की रिपोर्ट को बदल दिया गया। माननीय सदस्य ईश्वर सिंह पंलाका जी ने तो यह नहीं कहा परन्तु मैं बताना चाहता हूं कि जो कमेटी की आखिरी बैठक थी और जब उसकी मीटिंग हुई तो जैसे गुप्ता जी कह रहे थे मैं उन्हीं की बात को दोहरा रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, जब उस समय शोर मच रहा था तो गुप्ता जी ने यह बात कही थी कि

पलाका जी उस मीटिंग में नहीं आए थे इसलिए जो आदमी कमेटी की मीटिंग में ही न आए उनको इस बारे में क्या मालूम? अध्यक्ष महोदय, गुप्ता जी ने खड़े होकर सारी बात क्लीयर कर दी। This is completely contemptuous. चौटाला जी ने यह कहा कि 4400 करोड़ रुपये के ऋण माफी का बोझ प्रदेश सरकार पर पड़ा। स्पीकर साहब, अब यह बात स्पष्ट हो गयी कि 4400 करोड़ रुपये के बजाए केवल.....

शिक्षा मंत्री (श्री मांगे राम गुप्ता) : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात थोड़ी क्लीयर करना चाहता हूं। मैं कहना चाहता हूं कि ईश्वर सिंह पलाका तो उस दिन कमेटी की मीटिंग में मौजूद थे।

Shri Randeep Singh Surjewala : Speaker Sir, I stand corrected it. उस समय जो गुप्ता जी बोल रहे थे और मुझे जो उस समय शोर में सुनाई दिया मैं उसकी ही चर्चा कर रहा था। अध्यक्ष महोदय, उन्होंने कहा कि 4400 करोड़ रुपए का लोन प्रदेश की सरकार ने माफ किया। लेकिन इसकी जगह जो आंकड़े आए हैं वह केवल 65 करोड़ 45 लाख रुपए के हैं। स्पीकर साहब, कहां 65 करोड़ 45 लाख रुपए और कहां 4400 करोड़ रुपए? थोड़ा बहुत झूठ तो खप भी जाता है परन्तु चौटाला जी की जो आदत है वे वैसा ही करते हैं। जैसा बीरेन्द्र सिंह जी बता रहे हैं कि उन्होंने दूसरी वाली राशि जो खुद उनके पास हैं, वह भी इसके अंदर हिसाब लिखते हुए गलती से इसमें जोड़ ली होगी। अध्यक्ष महोदय, यह कहा गया कि 16514 करोड़ रुपये के ऋण माफ हुए। अध्यक्ष महोदय, दलबीर सिंह जो मध्य प्रदेश के रहने वाले थे और जो 1992 में मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर फाईनैंस थे, उनके जबाव को कोट किया गया। मैंने पार्लियामैंट की इस बारे में सारी प्रोसीडिंग्ज निकालकर रिकॉर्ड पर लगा दी। दलबीर सिंह का जबाव भी मैंने लगा दिया। जो बातें उन्होंने कहीं थी वह भी मैंने कमेटी के सामने पेश कर दीं। गुप्ता जी की कमेटी ने वे सारी बातें देख भी लीं। उन्होंने यह पाया कि 16514 करोड़ रुपए की फिगर्ज ही जबाव के अंदर कहीं नहीं है। चौटाला जी ने खड़े होकर कागज दिखाते हुए कहा कि इसमें 16514 करोड़ रुपये लिखे हैं। अध्यक्ष महोदय, जब मैं पार्लियामैंट से मशक्कत करके प्रोसीडिंग्ज निकलवाकर लाया तो यह पाया कि यह कहीं भी लिखा हुआ नहीं है। स्पीकर साहब, सच बात तो यह है कि चौटाला जी द्वारा इस हाउस को बरगलाया गया है and that is why Sir, I only want to quote one para which you also read from the report of the Committee. The inescapable conclusion that the Committee arrived that — "Therefore, the statement given by Shri Om Prakash Chautala M.L.A. was false. He further stated that waiving off loan of Rs. 16514 crores was misleading and figure is hypothetical."

Sir, again it is written in para 28 on page 102 that —"After going through the material evidence on record the Committee is of the view that the figure of waived loan given by Shri Om Prakash Chautala, M.L.A. was false and incorrect. It appears that Shri Om Parkash Chautala, M.L.A. misinterpreted the amount of Rs. 16514 crores. He also further tried to mislead the House by saying that there were no ifs and buts whereas there were some conditions for waiving of loans as has already been mentioned herein before in the report. The technical objection raised on terms of preference are not substantial in character and such an objection does not prove

[Shri Randeep Singh Surjewala]
that his version regarding figure quoted on the Floor of the House on 12.03.2008 was correct".

Sir, I only want to conclude by saying four things. Sir, No. 1 अब यह बात स्पष्ट हो गयी है कि 1987 से लेकर 2008 तक जो वे हजारों करोड़ रुपयों की ऋण माफी का दम भरते रहे वह गलत था क्योंकि वह ऋण माफी केवल 34 करोड़ के करीब थी। यह बात भी अब स्पष्ट हो गयी है कि 1990 की स्कीम में ऋण माफी केवल 65 करोड़ 45 लाख रुपये की हुई थी और उसमें से भी 25 करोड़ 86 लाख रुपये का भुगतान कांग्रेस सरकार ने किया, उन्होने नहीं किया। यह भी अब स्पष्ट हो गया है कि पूरे हिन्दुस्तान की 16514 करोड़ रुपए के ऋण माफी की जो फिगर्ज चौटाला जी ने दी वह फिगर भी गलत थी। 16514 करोड़ की ऋण माफी हिन्दुस्तान के अंदर नहीं हुई। अध्यक्ष महोदय, यह भी स्पष्ट हो गया है कि 4400 करोड़ रुपए का बोझ जो हरियाणा प्रदेश पर पड़ने का क्लेम किया इसमें हरियाणा प्रदेश का शेयर मात्र 65.45 करोड़ था। यह भी साबित हो गया है कि जो ऋण माफी थी वह आज की सरकार की तरह बगैर इफस एंड बट्स के नहीं की। 1987 में 10 हजार रुपये के ऋण की माफी की शर्त थी उसमें यह था कि सारा ऋण जमा कराओ तब दस हजार रुपये की छूट मिलेगी। अगर पांच लाख रुपये का ऋण होगा तो 5 लाख रुपया पूरा वापस जमा कराओ, तब दस हजार रुपये की छूट मिलेगी। स्पीकर सर, हर लोन माफी में शर्त थी। चौटाला जी ने इस हाउस को मिसलीड किया है। It is most condemnable. It is deplorable act and conduct on the part of Shri Om Prakash Chautala. उनको ऐसा बिहेव नहीं करना चाहिए था। उनको इस सदन में जिम्मेदारी से बात कहनी चाहिए थी। His act and conduct of misleading the House should be condemned and necessary action should be taken.